

## पाठ – 03 लीलाधर मंडलोई

### प्रश्न-अभ्यास

#### मौखिक:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

**उत्तर1:-** तताँरा-वामीरो एक लोक कथा है। यह देश के उन द्वीपों की कथा है जो आज लिटिल अंदमान और कार-निकोबार नाम से जाने जाते हैं। निकोबारियों का मानना है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे।

**उत्तर2:-** वामीरो सागर के किनारे गा रही थी। अचानक समुद्र की ऊँची लहर ने उसे भिगो दिया, इसी हड़बडाहट में वह गाना भूल गई।

**उत्तर3:-** तताँरा वामीरो के रूप और मधुर आवाज़ से सम्मोहित हो गया था। गाँव की रीति की परवाह किए बिना उसने अगले दिन फिर लपाती गाँव की उसी समुद्री चट्टान पर आने की याचना की।

**उत्तर4:-** तताँरा और वामीरो के गाँव की रीति थी कि विवाह के लिए लड़का-लड़की का एक ही गाँव का होना आवश्यक था।

**उत्तर5:-** क्रोध में तताँरा ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसकी तलवार को धरती में घोंप दिया और उसकी सारी शक्ति लगाकर खींचने लगा जिससे धरती में दरार पड़ गई और वह दो टुकड़ों में बँट गई।

#### लिखित:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए -

**उत्तर1:-** तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का मत था कि उसकी तलवार भले साधारण लकड़ी की थी पर तलवार में अद्भुत, विलक्षण और दैवीय शक्ति थी।

**उत्तर2:-** वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से जवाब दिया कि वह कौन है, उसे क्यों घूर रहा है और उसके इस तरह असंगत प्रश्नों के उत्तर वह क्यों दे? वह अपने गाँव के अतिरिक्त किसी अन्य युवक के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं है और यह बात वह भी जानता है।

## NCERT Solution

---

**उत्तर3:-** ततार्रा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार की सदियों से चल रही रुढ़िवादी परम्परा में परिवर्तन आया। उन दोनों की मृत्यु के पश्चात् गाँव वाले दूसरे गाँववालों से भी वैवाहिक सम्बन्धों को स्थापित करने लगे।

**उत्तर4:-** ततार्रा एक नेक, मददगार युवक था। वह सदैव दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता था। अपने नहीं बल्कि समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना चाहता था। जहाँ कहीं भी मुसीबत आती वह दौड़ा-दौड़ा चला जाता था। उसके इन्हीं मानवीय गुणों के कारण निकोबार के लोग ततार्रा को पसंद करते थे।

**(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए -**

**उत्तर1:-** निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का विश्वास है कि पहले यह दोनों द्वीप एक ही थे जो ततार्रा वामीरो की असफल प्रेम की त्रासदी के फलस्वरूप दो अलग-अलग द्वीपों में बदल गए।

**उत्तर2:-** ततार्रा दिनभर के अथक परिश्रम करने के बाद समुद्र किनारे टहलने निकलता है। उस समय सूरज डूबने का समय हो रहा था। समुद्र से ठंडी बयारें चल रही थी। पक्षियों के घोंसलों में लौटने का समय भी हो चला था इसलिए उनकी आवाजें धीरे-धीरे कम हो गई थीं। सूरज की अंतिम किरणें समुद्र पर प्रतिबिम्ब अंकित कर रही थी।

**उत्तर3:-** वामीरो के मिलने के पश्चात् ततार्रा हर-समय वामीरो के ही ख्याल में ही खोया रहता था। उसके लिए वामीरो के बिना एक पल भी गुजारना कठिन-सा हो गया था। वह शाम होने से पहले ही लपाती की उसी समुद्री चट्टान पर जा बैठता, जहाँ वह वामीरो के आने की प्रतीक्षा किया करता था।

**उत्तर4:-** प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए मेले, पशु-पर्व कुश्ती, गीत संगीत आदि अनेक प्रकार के आयोजन किए जाते थे। जैसे पशु-पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं का प्रदर्शन किया जाता था तो पुरुषों को अपनी शक्ति प्रदर्शन करने के लिए पशुओं से भिड़ाया जाता था। इस तरह के आयोजनों में सभी गाँववाले भाग लेते थे और गीत-संगीत के साथ भोजन आदि की भी व्यवस्था की जाती थी।

**उत्तर5:-** रुढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगे तब उनका टूट जाना ही अच्छा है क्योंकि तभी हम समय के साथ आगे बढ़ पाएंगे। बंधनों में जकड़कर व्यक्ति और समाज का विकास, सुख-

## NCERT Solution

आनंद, अभिव्यक्ति आदि रुक जाती है। यदि हमें आगे बढ़ना है तो इन रुढ़िवादी विचारधाराओं को तोड़ना ही होगा।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए -

**उत्तर1:-** इस पंक्ति का आशय यह है कि ततार्रा अपने अपमान को सहन नहीं कर पाया। अपने अपमान को शांत करने के लिए उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर धरती में अपनी तलवार घोंप दी। जिसके परिणास्वरूप धरती दो टुकड़ों में बँट गई।

**उत्तर2:-** इस पंक्ति के जरिए ततार्रा के मन की उधेड़बुन को दर्शाया गया है। वामीरो से मिलने की प्रतीक्षा में वह बैचैन रहता था। उसकी प्रतीक्षा आशा और निराशा के बीच झूलती रहती थी।

**भाषा अध्ययन:**

**उत्तर1:-** (क) विधानवाचक

(ख) प्रश्नवाचक

(ग) विधानवाचक

(घ) प्रश्नवाचक

(ङ) विस्मयादिबोधक

(च) विधानवाचक

**उत्तर2:-**

मुहावरे	वाक्य
सुध-बुध खोना	लता दीदी के गानों ने तो मेरी सुध-बुध ही भुला दी।
बाट जोहना	विदेश में गए अपने बेटे की माता-पिता बड़ी ही बेसब्रीसे बाट जो रहे थे।
खुशी का ठिकाना न रहना	कई सालों बाद अपने बचपन के मित्र से मिलकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।
आग बबूला होना	बेटे की शरारत पर पिता आग बबूला हो उठे।
आवाज उठाना	अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

**उत्तर3:-**

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
------	----------	---------

## NCERT Solution

चर्चित	चर्चा	इत
साहसिक	साहस	इक
छटपटाहट	छटपट	आहट
शब्दहीन	शब्द	हीन

### उत्तर4:-

अन + आकर्षक	अनाकर्षक
अ + ज्ञात	अज्ञात
सु + कोमल	सुकोमल
बे + होश	बेहोश
दूर + घटना	दुर्घटना

### उत्तर5:-

- (क) जीवन में पहली बार ऐसा हुआ कि मैं विचलित हुआ हूँ।  
(ख) फिर तेज कदमों से चलती हुई तताँरा के सामने आई और ठिठक गई।  
(ग) वामीरो कुछ सचेत होने पर घर की तरफ दौड़ी।  
(घ) उसने तताँरा को देखा और फूटकर रोने लगी।  
(ङ) रीति के अनुसार यह आवश्यक था कि दोनों एक ही गाँव के हो।

### उत्तर6:-

- (क) पास में सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। (दो पदों को जोड़ना)  
(ख) वह कुछ और सोचने लगी ।( 'अन्य' के अर्थ में)  
(ग) एक आकृति कुछ साफ हुई... कुछ और... कुछ और... (क्रमशः : धीरे - धीरे के अर्थ में)  
(घ) अचानक वामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ दौड़ गई। (दो उपवाक्यों को जोड़ने के अर्थ में)  
(ङ) वामीरो का दुख उसे और गहरा कर रहा था। ('अधिकता' के अर्थ में)  
(च) उसने थोड़ा और करीब जाकर पहचानने की चेष्टा की। ('निकटता' के अर्थ में)

### उत्तर7:-

शब्द	विलोम शब्द
भय	निर्भय
मधुर	कटु

## NCERT Solution

संभय	असंभय
मूक	वाचाल
तरल	ठोस
उपस्थिति	अनुपस्थिति
सुखद	दुखद

**उत्तर8:-** समुद्र - सागर, सिंधु।  
आँख - नेत्र, लोचन।  
दिन - वासर, वार।  
अंधेरा - अंधकार, तम।  
मुक्त - आज़ाद, स्वतंत्र।

**उत्तर9:-**

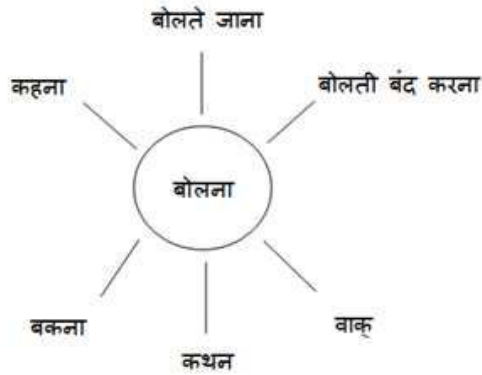
शब्द	वाक्य
किंकर्तव्यविमूढ़	अब ऐसे किंकर्तव्यविमूढ़ न खड़े रहो, जाओ जाकर काम करो।
विह्वल	उन अनाथ बच्चों की दशा देखकर मैं भाव विह्वल होउठी।
भयाकुल	उस बालक ने भयाकुल नज़रों से मेरी ओर देखा।
याचक	दरवाजे पर कोई याचक खड़ा है।
आकंठ	भक्त अपने गुरु के सत्संग में आकंठ डूब चुके थे।

**उत्तर10:-** वाक्य में दिन के लिए आँचरहित - एक - ठंडा और ऊबाऊ विशेषणों का प्रयोग किया गया है।

दिन के लिए कुछ और विशेषण -

- 1) बर्फीला
- 2) उष्णता रहित
- 3) बड़ा
- 4) लंबा
- 5) नीरस
- 6) उमस भरा

**उत्तर11:-**



- 1) तुम यह क्या कह रहे हो?
- 2) सीता है कि बोलते ही जा रही है।
- 3) राम कुछ भी मत बको।
- 4) वाह! क्या खूब तुमने तो उसकी बोलती ही बंद कर दी।
- 5) इस कथन का तात्पर्य क्या है?
- 6) सभी उसकी वाक्पटुता के कायल हो चूके थे।

**उत्तर12:-** पदबंधों के प्रकार -

- (क) विशेषण पदबंध
- (ख) क्रिया पदबंध
- (ग) क्रियाविशेषण पदबंध
- (घ) संज्ञा पदबंध
- (ङ) संज्ञा पदबंध